अमृतलाल नागर का साहित्य

डॉ. आर.एम. जाधव
डॉ. भगवान जाधव

अमृतलाल नागर का साहित्य
उपलब्धि और प्रदेय

सम्पादक

डॉ. आर.एम. जाधव

डॉ. भगवान एन. जाधव

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

दिल्ली

Late Ramesn Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फ़ोन : +91 9968084132, +91 9910947941

arpublishingco11@gmail .com

AMRITLAL NAGAR KA SAHITYA : UPLABDHI AUR PRADEY
Edited by Dr. R.M. Jadhav, Dr. Bhagwan N. Jadhav

ISBN : 978-93-862-36-21-0

© सम्पादकद्वय

संस्करण : 2017

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग
करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में गाँधीवादी विचार धारा 231
—डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

नाच्यौ बहुत गोपल की निर्गुणीया 235
—प्रा. डॉ. कल्याण गुरुनाथ

सामाजिक दस्तावेज 'अमृत और विष' 238
—प्रा. डॉ मा. ना. गायकवाड़

बिखरे तिनके उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ और युवावर्ग का असफल विद्रोह 241
—डॉ. चांदणी लक्ष्मण पैचांगे

अमृतलाल नागर के 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में नारी संघर्ष 245
—डॉ. जलालखान पठाण

नागर जी की मानववादी दृष्टि : भूख के सन्दर्भ में 249
—प्रा. डॉ. परविंदर कौर महाजन, प्रा. घुमे मीना भाऊराव

'मानस का हंस' उपन्यास में युगबोध 253
—प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे

'बिखरे तिनके' उपन्यास में चित्रित राजनीतिक चेतना 258
—प्रा. डॉ. सुभाष नागोराव क्षीरसागर

उपन्यासकार अमृतलाल नागर 262
—प्रा. डॉ. जाधव अर्जुन रतन

अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यासों में युगबोध 268
—प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव

अमृतलाल नागर की कहानियों में अभिव्यक्त समस्याएँ 272
—प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मानवतावाद 275
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड़

मानस का हंस' उपन्यास में व्यक्त समष्टिभाव 279
—प्रा. डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे

व्यष्टि और समष्टि के अनगिनत विसंगतियों का दस्तावेज बूँद और समुद्र 284
—डॉ. यशवंतकर संतोष कुमार

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यासों में युगबोध

(विशेष सन्दर्भ : मानस का हंस और खंजन नयन)

प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव

अमृतलाल नागर की रुचिबचपन से ही साहित्य की ओर थी। घर में साहित्यिक वातावरण था। सरस्वती गृहलक्ष्मी, हिन्दु पंच आदि पत्रिकाएँ बड़े चाव से पढ़ते थे। आरम्भ से ही नागर जी साहित्यिक विद्वानों के सम्पर्क में आये। साहित्यिक परिनेश और गोष्टियों ने उन्हें सृजनशील बनने पर प्रवृत्त किया और तेरह वर्ष की आयु में ही पहली तुकबन्दी फूट पड़ी। इस प्रथम मुखर अभिव्यक्ति की प्रेरणा के विषय में नागर जी लिखते है—सन 1928 में इतिहास प्रसिद्ध साइमन कमीशन के विरोध में एक बहुत बडा जूलूस निकला था लड़काई उमर के जोश में मैं उस जुलूस में शामिल हुआ। मुझे अच्छी तरह से याद है कि दो चक्की के पाटों में पिस कर मेरा दम घुटने लगा था। मेरे पैर जमीन से उखड़ गये थे दायें, बाये आगे-पीछे चारों और की उन्मन भीड़ टक्करों पर टक्करे देती थी। उस दिन घर लौटने पर मानसिक उत्तेजनावश पहली तुकबन्दी फुटी ''कब लौं कहो लाठी खाया करै, कब लौं कहों जेल सहा करिये।'[1] बह कविता तीसरे दिन 'दैनिक आनन्द' में छप गई-बस मैं लेखक बन गया। मेरा खयाल है दो तीन प्रारम्भिक तुकबन्दियों के बाद मेरा रुझान गद्य की ओर गया, कहानियाँ लिखने लगा। श्री प्रकाशचन्द्र मिश्र के अनुसार—''प्रसिद्ध हास्य काव्य के लेखक श्री शिवनाथजी उनके पडोसी थे। पं. माधव शुक्ल, डॉ. श्यामसुन्दर दास तथा उर्दू शायर पं. ब्रजनारायण 'चकबस्त' आदि विद्वानों का उनके यहाँ उठना-बैठना था कदाचित उन्हीं के सम्पर्क में ही उन्हें लेखक बनने की प्रेरणा रही हो।''[2] सन् 1929 में उनका परिचय महाकवि निराला से हुआ। श्री दुलारेलाल भार्गव और मिश्र बन्धुओं के व्यक्तित्व से वे काफी प्रभावित हुए प्रोत्साहन मिला। पं. श्यामबिहारी मिश्र द्वारा कहे गए इन शब्दों ने कि—''साहित्य को टके कमाने का साधन कभी नहीं बनाना चाहिए।''[3] नागर जी के मन पर बड़ी गहरी छाप छोड़ी।

नागर जी ने निराला से दृढ़ता पायी तो शरतचन्द्र के स्नेह ने उन्हें संवेदनात्मक भाऊकता प्रदान की। शरतचन्द्र ने नागर जी को लेखन का मूल लक्ष्य बतलाते हुए कहा

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Dist. Parbhani

था–"जो कुछ भी लिखो, वह अधिकतर तुम्हारे अपने ही अनुभवों के आधार पर हो, व्यर्थ की कल्पना के चक्कर में कभी न पडना।"[4] इसी को नागर जी ने अपने लेखन का मूल-मन्त्र माना। वे समाज में खूब घुल मिलकर अपके देखे-सुने और अनुभव किए चरित्रों, प्रसंगों को मन की कल्पना के पुट से अपने कथा-साहित्य में ढालते रहे।

नागर जी के प्रायः सभी उपन्यास और कहानियां जीवन के यथार्थ पहलुओं का अंकन करती है, मानवता, इन्सान की इन्सानियत में उनकी अटूट आस्था है। नागर जी के जीवन में अनेक महान साहित्यकार आए, सबसे उन्होंने प्रेरणा ली। उपनी पुस्तक 'जिनके साथ जिया' में अपने प्रेरणादायी साहित्यकारों के भाव-भीने संस्मरण लिखे। इसी प्रकार नागर जी विदेशी भाषाओं के महान साहित्यकारों से भी प्रेरणा ग्रहण करते थे। नागर जी के लेखक के पीछे ये ही प्रेरणाएँ रही हैं जिन्होंने उनको एक श्रेष्ठ साहित्यकार और एक ऐसा प्राणवान लेखक-रूप दिया है। नागर जी की रुचियों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। साहित्य तो उनका क्षेत्र था ही, किन्तु वे इतिहास पुराण, पुरातत्व, विज्ञान, राजनीति, ज्योतिष, रंगमंच चलचित्र आदि विषयों के भी मर्मज्ञ थे। नागर जी ने सच्चे अर्थो में भारतीय जीवन और उसकी स्वस्थतम परम्पराओं को अपने लेखन में स्थान दिया है। भारतीय जीवन में संस्कृति को विकृत करने वाली प्रवृत्तियों पर नागर जी ने व्यंग्य के माध्यम से जबरदस्त प्रहार किया है। भारतीय जीवन और समाज में खुलेपन को उन्होंने अपनी रचना वैविध्यता से उपन्यास, कहानी, हास्य-व्यंग्य के रूप में अभिव्यक्त किया है वे किस्सागोई के सिद्धहस्त थे और ऐसा रोचक कथानक बुनते थे कि उनके उपन्यास शुरू से अन्त तक बिना पढ़े छोड़ना मुश्किल होता है। नागरजी ने निश्चय ही हिन्दी कथा साहित्य को समृद्ध किया है।

सुप्रसिद्ध आलोचक नामवर जी ने बहुत सही कहा है कि–"नागर जी उन लेखकों में थे जिन्होंने जीवन में विष पीकर भी समाज को अमृत दिया। वह अजाज शत्रु थे। हरदिल अजीज और हर लेखक को दोनों बाहे खोलकर सीने से लगाने वाले-फिर चाहे उसके विचार कुछ भी हों। इस जमानें में ऐसे विशाल हृदय वाले माननीय लेखक कम ही हुए है।"[5]

प्रबन्ध प्रधान साहित्यिक कृतियाँ किसी न किसी काल-विशेष से सम्बन्ध होती है। रचनाकर के लिए यह आवश्यक होता है कि कृति को अधिक से अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए वह इस काल-विशेष की मूलभूत विशेषताओं को कृति में अनुस्यूत करे यह विश्वसनीयता उसे काल के सांस्कृतिक परिवेश, सामाजिक गहन, वर्गीय विभेद और राजनैतिक व्यवस्था के द्वारा पैदा की जाती है।

'मानस का हंस' और खंजन नयन इन दोनों उपन्यासों में तत्कालीन राजनैतिक पृष्ठभूमि को बड़ी कुशलता से उभारा गया है। यह कार्य नागरजी ने हो रूपों में संम्पदित किया है। एक ऐतिहासिक घटनाओं को उनके ऐतिहासीक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत करके राजनैतिक व्यवस्था और प्रलम्बीत शासन प्रणाली का चित्रण किया गया है तो इसके

ate Ramesh Warpudkar (ACS) Coll
Dist. Parbha

अन्तर्गत काल्पनिक घटनाओं द्वारा तत्कालीन राजनैतिक स्थितियों, प्रशासनिक प्रवृत्तीयों और प्रजा की प्रतिक्रियाओं को व्यक्त किया गया है। वे तत्कालीन राजनैतिक पृष्ठभूमि का सच्चा चित्र प्रस्तुत करती है।

मानस का हंस और खंजन नयन दोनों उपन्यासों में नागरजी ने तत्कालीन धार्मिक परिवेश को बडी सफलता के साथ अंकित किया है। इसमें कुछ इतिहास सम्मत पात्रों का आधार किया गया है और कुछ कलित पात्रों एवं घटनाओं को उद्भावना की गयी है। उक काल के धार्मिक परिवेश को प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया है। इस प्रकार 'मानस का हंस' और 'खंजन नयन' में नागर जीने तुलसी और सूर के समय के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण को बड़ी कुशलता से रुपायित किया है साथ ही मध्यमकालीन सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितीयों को चित्रित करते समय जहाँ उन्हें ऐतिहासिक सन्दर्भ से जोड़ने का प्रयत्न किया है। वहीं पर वर्तमान संदर्भो में उनकी प्रसांगिकता को सिद्ध करने का भी प्रयत्न किया है। वे कारणीभूत स्थितीयों के परिणामों के साक्ष्य पर वर्तमान जीवन की सामाजिक और सांस्कृतिक सरणियों को एक आदर्श रूप देना चाहते है।

इस प्रकार से किसी भी रचनात्मक साहित्य का चाहें वह ऐतिहासिक हो अथवा काल्पनिक वर्तमान संदर्भों में प्रासंगिक होना अनिवार्य है। वर्तमान के जीवन बोध के साथ रचना की संगति बिठाना रचनाकार के लिए शर्त है। साहित्यकार युगीन समस्याओं के अथवा युगीन स्थितियों के व्यापकीकरण के लिए साहित्य की सृष्टि करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रासंगिकता किसी भी रचनाकार की सफलता का प्रत्यक्षकारी मापदण्ड है।

नागर जी के जीवनी परक उपन्यास 'मानस का हंस' और 'खंजन नयन' क्रमशः गोस्वामी तुलसीदास और महाकवि सूरदास के जीवन पर आधारित है। ये दोनों लब्ध प्रतिष्ठ महाकवि अनन्य भक्त तत्वदर्शी और सहज मानवीय करुणा से ओत-प्रोत हैं। सर्वमान्य सत्य यह है कि—''दोनों भक्त शिरोमणि जन मानस में अत्यंत आदरणीय और श्रद्धास्पद है। इन महापुरुषों की यह सफलता आज के टूटते हुए नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में प्रेरणास्पद और मूल्यवान है। ह्रदय परिवर्तन का सिद्धान्त आज भी किसी बाहरी दबाव की अपेक्षा अधिक सार्थक और विश्वसनीय है। मानस का हंस में रविदत्त जैसे क्रुद्ध तांत्रिक का ह्रदय परिवर्तन और खंजन नयन में कृष्णदास अधिकारी जैसे कुटिल षडयंत्रकारी का ह्रदयपरिवर्तन आज के सन्दर्भ में मात्र प्रासंगिक न होकर प्रेरक भी है।''

नागर जी की कृतियाँ मानस का हंस और खंजन नयन हमारे वर्तमान युगबोध से जुड़ी हुई हैं। दोनों के कथा सन्दर्भ ऐतिहासिक होने पर भी वर्तमान जीवन की वस्तुस्थिति को इनमें बड़े कौशल से निरूपित किया गया है।''[7] इन कृतियों से हमें ऐसे अनेक संकेत मिलते हैं जिनके आधार पर वर्तमान के यथार्थ को सही रूप में समझा जा सकता है। ये रचनाएँ वर्तमान सन्दर्भ में पूरी तरह से प्रासंगिक है।

नागरजी ने अपनी सम्पूर्ण आयु भारतीय मनीषा के आदर्श के अनुरूप व्यतीत की। उनके संम्पूर्ण लेखन और व्यक्तिगत जीवन पर दृष्टि डालने से यह बात साबित हो जाती है कि अनेक विध संघर्षों में तपते हुए उन्होंने एक अनुकरणीय सार्वजनिकता हमारे सामने रखी नागर जी चाहे अतीत का आख्यात दुहरा हरे हो या समसामयिक जीवन को अभिव्यक्ति दे रहे हो, उनी चिन्ता का केन्द्र बराबर वर्तमान रहता था, जिसके भीतर उज्ज्वल भविष्य के लिए संघर्ष की प्रेरणा निहित थी।

सन्दर्भ

1. नीर-क्षीर–अमृतलाल नागर (अंक अगस्त 1966), पृ. 08
2. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य–प्रकाशचन्द मिश्र, पृ. 43
3. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य–प्रकाशचन्द्र मिश्र, पृ. 44
4. जिन के साथ जिया–अमृतलाल नागर, पृ. 16
5. आजकल (मई 1990), पृ. 3 (संपादकीय)
6. मानस का हंस–अमृतलाल नागर, पृ. 217
7. अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास–डॉ.सुरेखा झाडे, पृ. 171

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani